October
December 25

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

Vol - 1
Issue - 4

नालंदा विश्वविद्यालय: भारतीय शिक्षा परंपरा का गौरवशाली अध्याय"

आलोक कुमार पाण्डेय
सह प्राध्यापक
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध सारांश

नालंदा प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का एक ऐसा महान केंद्र था, जिसने न केवल भारतवर्ष बल्कि सम्पूर्ण एशिया को शैक्षिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दिशा प्रदान की। यह शोध नालंदा विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैक्षणिक संरचना, विषय-विस्तार तथा प्रशासनिक व्यवस्था का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। नालंदा केवल औपचारिक शिक्षा का संस्थान नहीं था, बल्कि यह मूल्याधारित शिक्षा, आत्मबोध, अनुशासन एवं नैतिक विकास का भी सशक्त माध्यम रहा। यहाँ वेद, उपनिषद, बौद्ध दर्शन, न्याय, योग, व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र तथा कला एवं शिल्प जैसे विविध विषयों का अध्ययन कराया जाता था। विशाल पुस्तकालयों ने ज्ञान के संरक्षण एवं प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चीन, जापान, कोरिया, श्रीलंका, तिब्बत एवं दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे देशों से आए छात्रों ने इसकी अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को सुदृढ़ किया। यह शोध नालंदा की शैक्षणिक उत्कृष्टता का मूल्यांकन करते हुए आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए इसके आदर्शों, समग्र दृष्टिकोण और वैश्विक चेतना से प्रेरणा ग्रहण करने पर बल देता है।

कुंजीभूत शब्द:

समृद्ध ज्ञान परंपरा, वसुधैव कुटुम्बकम, सर्वे भवन्तु सुखिनः, सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, आत्मोन्नति, रत्नसार, रत्नोदधि, रत्नरंजक।

प्रस्तावना

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है, जिसकी महानता का मूल आधार उसकी समृद्ध ज्ञान परंपरा रही है। भारतीय संस्कृति ने सदैव ज्ञान, शिक्षा और अध्यात्म को मानव

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना है। प्राचीन काल में भारत की शिक्षा व्यवस्था के लिए नालंदा न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बल्कि सम्पूर्ण एशिया में शिक्षा के आलोक स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित था। नालंदा में शिक्षा केवल विद्या प्राप्ति का साधन नहीं थी, बल्कि जीवन के आदर्श, नैतिक मूल्यों, और आत्मबोध की दिशा में एक सतत प्रक्रिया थी। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूलाधार "सर्वे भवन्तु सुखिनः" तथा "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" जैसे वैदिक विचारों में निहित है, जो यह प्रतिपादित करते हैं कि ज्ञान का उद्देश्य केवल भौतिक उन्नति नहीं, बल्कि आत्मोन्नति और सार्वभौमिक कल्याण है।1 प्राचीन शिक्षा के इस केंद्र ने इसी दार्शनिक दृष्टिकोण को व्यवहार में उतारा। यहाँ विद्यार्थियों को व्याकरण, वेद, दर्शन, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, राजनीति, न्यायशास्त्र आदि विषयों के साथ-साथ नैतिकता, अनुशासन और समरसता का भी संस्कार दिया जाता था। इस शिक्षा केंद्र का योगदान केवल शैक्षणिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने भारतीय संस्कृति, साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन के संरक्षण और संवर्धन में भी अमूल्य भूमिका निभाई। इसके माध्यम से भारत ने विश्व को न केवल ज्ञान का दीपक प्रदान किया, बल्कि "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना का भी प्रचार-प्रसार किया।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब शिक्षा प्रणाली पुनः मूल्याधारित एवं समग्रता की ओर अग्रसर हो रही है, तब प्राचीन शिक्षा केंद्रों की ज्ञान परंपरा का पुनः अध्ययन अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। यह शोध इसी उद्देश्य से किया जा रहा है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा केंद्र के योगदान को पुनः रेखांकित किया जा सके और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के लिए इससे प्रेरणा प्राप्त की जा सके।2

नालंदा विश्वविद्यालय

प्राचीन भारत के शिक्षा केंद्रों में नालंदा विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस विश्वविद्यालय के बारे में अधिक जानकारी हमें चीनी यात्रियों से मिलती है। पांचवी से सातवीं शताब्दी के मध्य यह बौद्ध विद्या केंद्र अपनी महत्वपूर्ण स्थिति में था। यह विश्वविद्यालय दक्षिणी बिहार में स्थित राजगिरी के समीप स्थित है। आज इसके ध्वंशवशेष बड़ागांव ग्राम तक फैले हुए हैं। इस विश्वविद्यालय के निर्माण के विषय में निश्चित जानकारी का अभाव है। फिर भी गुप्त वंशी शासक कुमार गुप्त (414 455 ईस्वी) ने इस बौद्ध संघ को पहले दान दिया था।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

व्हेनसांग के अनुसार लगभग 470 ईस्वी में गुप्त सम्राट नरसिंह गुप्त बालादित्य ने नालंदा में एक सुंदर मंदिर निर्माता करवा कर इसमें 80 फीट ऊंची तांबे की बुद्धि प्रतिमा को स्थापित करवाया।[3]

स्थिति

यह विश्वविद्यालय वर्तमान बिहार प्रांत के पटना नगर से लगभग 75 किमी की दूरी पर स्थित था। यह महात्मा बुद्ध के प्रिय शिष्य सारिपुत्र की जन्म भूमि थी। यहां प्रथम विहार का निर्माण बौद्ध धर्मावलंबी सम्राट अशोक ने ई पू तीसरी शताब्दी में कराया था। ई पू द्वितीय शताब्दी में यह शिक्षण केंद्र के रूप में विकसित हुआ। गुप्तवंश के वैदिक धर्मावलंबी सम्राटों ने भवनों का निर्माण कराया। 7 वी शताब्दी में यह अपने विकास के उच्च शिखर पर था।[4]

भवन एवं पुस्तकालय

चीनी यात्री ह्वेनसांग (7 वीं शताब्दी) ने अपने भारत यात्रा वर्णन में लिखा है कि इस विश्वविद्यालय में 300 अध्ययन कक्ष, 8 बड़े सभाभवन, 13 छात्रावास भवन और साथ ही अनेक शिक्षक निवास भवन और भोजनालय भवन आदि थे। इसके चारों ओर पक्की चारदीवारी थी। इसके अंदर जाने के लिए केवल एक फाटक था। इस विश्वविद्यालय के मध्य में एक 9 मंजिला विशाल पुस्तकालय भवन था जो तीन भवनों में बंटा था। रत्नसार, रत्नोदधि और रत्नरंजक। रत्नसार में सभी धर्मों से संबंधित पुस्तकें थीं। रत्नोदधि में विज्ञान आदि से संबंधित पुस्तक थी और रत्नरंजक में सभी कलाओं से संबंधित पुस्तक थी। इस पुस्तकालय में कुल मिलाकर हजारों पुस्तक थी और सैकड़ो विद्वान ग्रंथों की प्रतियां तैयार करने और एक भाषा के ग्रंथों का दूसरी भाषा में अनुवाद करने में लगे थे।[5]

प्रशासन एवं वित्त

विश्वविद्यालय का प्रमुख भिक्षु (कुलपति) विश्वविद्यालय के भिक्षुओं (शिक्षकों) द्वारा निर्वाचित होता था। इसकी अध्यक्षता में दो समितियां प्रशासनिक और शैक्षणिक का गठन किया जाता था जो क्रमशः विश्वविद्यालय के प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यों के लिए उत्तरदाई होती थी। इस

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

विश्वविद्यालय को 200 गांव दान में मिले थे। इनसे होने वाली आय से इस विश्वविद्यालय का खर्च चलता था। इसे राजा महाराजाओं का आर्थिक सहयोग भी बराबर प्राप्त होता रहा।[6]

छात्रों का प्रवेश

प्रधान द्वार पर भिक्षुओं द्वारा प्रवेश परीक्षा ली जाती थी। इस परीक्षा में केवल 10 से 25 प्रतिशत तक छात्र सफल होते थे। प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को बिना किसी भेदभाव के प्रवेश दिया जाता था।[7]

पाठय विषय

नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध साहित्य एवं दर्शन, (महायान एवं हीनयान दोनों शाखों का) चारों वेद, न्याय, संख्या एवं योग दर्शन, जैन धर्म, व्याकरण, गणित, रसायनशास्त्र, ज्योतिष, कला, शिल्प और आयुर्वेद चिकित्सा की शिक्षा की उत्तम व्यवस्था थी।[8]

शिक्षण व्यवस्था

ह्वेनसांग ने लिखा है कि इस विश्वविद्यालय में प्रतिदिन 100 भाषण होते थे। शिक्षक परिश्रम से पढ़ाते थे। अर्थ समझाते थे और व्याख्या करते थे।

aryavart
Journal of Multidisciplinary Research

शिक्षक

ह्वेनसांग के समय में इसमें 1500 भिक्षु (उपाध्याय, शिक्षक) थे। शीलभद्र इसके कुलपति थे। इस विश्वविद्यालय में तीन श्रेणी के शिक्षक थे। 20 से 29 तक ग्रंथों की व्याख्या करने वाले, 30 से 49 तक ग्रंथों की व्याख्या करने वाले और 50 से अधिक ग्रंथो की व्याख्या करने वाले। इस कल के मूर्धन्य विद्वान नागार्जुन इसी विश्वविद्यालय के शिक्षक थे। सभी शिक्षक सादा और संयमित जीवन जीते थे।[9]

शिक्षार्थी

ह्वेनसांग के समय इसमें देश विदेश के-10,000 छात्र थे। विदेशी छात्रों में चीन, तिब्बत, जापान, कोरिया, वर्मा, सुमात्रा, जावा और लंका के छात्र थे। छात्रों के रहने के लिए छात्रावास थे और

उनके सोने के लिए पत्थर की चौकियां थी। भोजन की व्यवस्था सामूहिक रूप से होती थी। सभी छात्र सादा और सीमित जीवन जीते थे।

परीक्षा एवं उपाधियां

नालंदा विश्वविद्यालय में शिक्षा पूर्ण होने पर छात्रों की परीक्षा होती थी। छात्र भिक्षुओं के एक पैनल के सामने उपस्थित होते थे। भिक्षु उनसे मौखिक रूप से प्रश्न पूछते थे। संतुष्ट होने पर उन्हें सफल घोषित किया जाता था। सफल छात्रों को स्नातक की उपाधि दी जाती थी।

कार्यकाल एवं इति श्री

यूं तो नालंदा के विहार में ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में ही शिक्षा की व्यवस्था हो गई थी। परंतु एक समृद्ध विश्वविद्यालय के रूप में इसका विकास ईसा की चौथी शताब्दी में हुआ। 7वीं शताब्दी में यह अपनी उन्नति के उच्चतम शिखर पर था। उस समय यह अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय था। सुदूर देशों चीन, जापान, कोरिया, वर्मा, सुमात्रा, जावा और लंका से भी यहां छात्र आते थे। 12वीं शताब्दी के अंत तक यह अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में कार्यरत रहा। 1205 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली की गद्दी पर बैठते ही अपने सेनापति बख्तियार खिलजी द्वारा इसे नष्ट करवा दिया। इसके विशाल भवन तुड़वा दिए। इसका विशाल पुस्तकालय जलवा दिया एवं इसके शिक्षक मरवा डाले। अब इसके अवशेष ही इसकी गाथा के प्रतीक है।[10]

संदर्भ ग्रन्थ

1. Xuanzang. (1884). सी-यू-की (पश्चिमी देशों का बौद्ध विवरण) (अनुवाद: एस. बील). लंदन: ट्रूबनर एण्ड कम्पनी, पृ. 111-136.
2. Yijing. (1896). भारत एवं मलय में प्रचलित बौद्ध धर्म का विवरण (अनुवाद: जे. ताकाकुसु). ऑक्सफोर्ड: क्लेरेनडन प्रेस, पृ. 153-176.
3. Faxian. (1886). बौद्ध देशों का विवरण (अनुवाद: जेम्स लेग). ऑक्सफोर्ड: क्लेरेनडन प्रेस, पृ. 98-112.

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

4. सुकुमार दत्त, (1962). पूर्वी भारत के बौद्ध मठ एवं विहार. लंदन: एलेन एण्ड अनविन, पृ. 277-315.
5. मुखरजी आर. के.(1996). प्राचीन भारतीय शिक्षा: ब्राह्मण एवं बौद्ध पद्धति. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, पृ. 510-545.
6. बासम, ए.ल. (2004). वह भारत जिसे हम जानते हैं. नई दिल्ली: रूपा पब्लिकेशन्स, पृ. 399-405.
7. Archaeological Survey of India. (1989). नालंदा: सांस्कृतिक एवं शैक्षिक धरोहर नई दिल्ली: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, पृ. 40-72.
8. यूनेस्को (2016). नालंदा (बिहार): विश्व धरोहर स्थल अभिलेख. पेरिस: यूनेस्को, पृ. 22-41.
9. सिराज मिनहाज, (1881). तबक़ात-ए-नासिरी (अनुवाद: एच. जी. रैवर्टी). कलकत्ता: एशियाटिक सोसायटी, पृ. 551-553.
10. मजूमदार, आर.सी, (1977). भारत के हिंदू राज्यों का पतन. दिल्ली: मुंशी राम मनोहर लाल, पृ. 239-245.

aryavart
Journal of Multidisciplinary Research